श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीनवद्वीप - धाम की महिमा

श्रीगोलोक धाम में दो प्रकोष्ठ हैं, एक माधुर्यमय एवं एक औदार्यमय। श्रीगोलोकधाम के माधुर्यमय प्रकोष्ठ में नन्दनन्दन श्रीकृष्ण जी की नित्य-लीला चल रही है; एवं औदार्यमय प्रकोष्ठ श्रीनवद्वीपधाम में श्रीकृष्ण ही श्रीमती राधारानी जी का भाव एवं अंगकान्ति ग्रहण करते हुए, श्रीगौरांग

रूप से संकीर्तन - रास की लीला कर रहे हैं।

इसीलिये श्रीनवद्वीप धाम, गोलोक या वृन्दावन से भिन्न नहीं है। नौ द्वीप लेकर, श्रीनवद्वीपधाम की रचना हुई है। यह एक कमल के समान है और ये कमल सुन्दर सी आठ पंखुड़ियों वाला है। कमल के मध्यस्थल में, बीजकोष सदृश एक द्वीप है। गंगा नदी के दोनों किनारों पर यह कमल पुष्प विराजमान है। इसके पूर्व की तरफ, चार द्वीप हैं और पश्चिम की तरफ पाँच द्वीप हैं। श्रीनवद्वीप -

धाम के सम्बन्ध में बहुत से शास्त्रीय प्रमाण - हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जाता है —

ऊर्ध्वाम्नाय महातन्त्र में श्रीमहादेव- पार्वती संवाद में श्रीमहादेव द्वारा कहा गया है जी —

शृणु देवी प्रवक्ष्यामि नवखण्डस्वरूपकम् ।
यत्र वै राजते नित्यं श्रीगौरसुन्दरो हरिः॥
अन्तर्द्वीपस्तथा देवी सीमन्तद्वीपसंज्ञकः ।
गोदुमद्वीपसंज्ञोऽन्यो मध्यद्वीपस्तथापरः ॥
गंगापूर्वतटे रम्ये देवि द्विपचतुष्टयम् ।
कोलद्वीप ऋतुद्वीपो जहनुद्वीप: सुरेश्वरि।
मोददुमस्तथारुद्र: पंचैते पश्चिमे तटे ॥

अर्थात् हे देवी! जहाँ साक्षात् श्रीहरि — श्रीगौरसुन्दर जी के रूप में नित्य विराजमान रहते हैं उस नवद्वीप का स्वरूप तुम्हारे सामने वर्णन करता हूँ, तुम बड़े

ध्यान व श्रद्धा के साथ श्रवण करो — गंगा के पूर्व तट पर अन्तर्द्वीप, सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप और मध्यद्वीप नाम से चार द्वीप एवं पश्चिम तट पर कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, जनुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप और रुद्रद्वीप विराजमान हैं।

श्रील प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद जी अपने श्रीनवद्वीपशतक नामक ग्रन्थ में लिखते हैं -

श्रुतिच्छान्दोग्याव्या वदति परमं ब्रह्मपुरकं
स्मृतिर्वैकुण्ठाख्यं वदति किल यद् विष्णुसदनम्।
सितद्वीपन्चान्ये विरलरसिकोऽयं व्रजवनं
नवद्वीपं वन्दे परमसुखदं तं चिदुदितम् ॥

अर्थात् 'छान्दोग्य' नामक उपनिषद में जिसे 'ब्रह्मपुर' कहा है, स्मृति शास्त्र जिसको 'विष्णुसदन वैकुण्ठ' कहकर कीर्तन करते हैं एवं पुराणों में जिसे 'परव्योम श्वेतद्वीप' कहकर वर्णन किया है तथा विरल -

रसिक- भक्तगण जिसको 'व्रजवन' के नाम से पुकारते हैं, उन भगवान की चित्शक्ति से प्रकटित परम सुखद श्रीनवद्वीपधाम की मैं वन्दना करता हूँ।

अनन्तसहिता के द्वितीय भाग के तीसरे अध्याय में वर्णन है -

श्रीपार्वत्युवाच

कुत्र वै स नवद्वीपो यत्र गौरो विराजते।
नवद्वीपस्य माहात्म्यं वद देव दिगम्बर॥

श्रीमहादेव उवाच —

यथा वृन्दावनं धाम श्रीकृष्णस्य कृपानिधेः।

नवद्वीपस्तथा कान्ते सत्यं सत्यं

वदाम्यहम्॥

यद्वद् वृन्दावने रम्ये श्रीकृष्णो राधया सह।

रेमे भक्तानन्दकरस्तद्वद्द्वीपे द्वीपः

परमशोभनः।

यस्य स्मरणमात्रेण श्रीराधाकृष्णयोः

रतिः॥

अर्थात् पार्वती जी कहती हैं — हे देव दिगम्बर ! जिस स्थान पर श्रीगौरचन्द्र जी विराजमान हैं, वह श्रीनवद्वीपमधाम कहाँ है ? अब आप कृपा करके श्रीनवद्वीप की महिमा वर्णन कीजिये |

श्रीमहादेव जी कहते हैं — हे प्रिये! कृपामय श्रीकृष्ण का श्रीवृन्दावनधाम जिस प्रकार है, श्रीनवद्वीपधाम भी उसी प्रकार है, यह मैं सत्य-सत्य कहता हूँ। हमेशा भक्तों को आनन्द देने वाले भगवान श्रीकृष्ण, श्रीराधा जी के साथ रमणीय श्रीवृन्दावनधाम में जिस प्रकार लीला करते हैं, उसी प्रकार वे भगवान श्रीकृष्ण यहाँ श्रीनवद्वीपधाम में भी लीला करते हैं। गंगा और यमुना के मध्यभाग में परम - शोभामय श्रीनवद्वीपधाम विराजित है। उक्त धाम के स्मरणमात्र से ही मानव का,

श्रीराधाकृष्ण में अनुराग उदय हो जाता है।

अनन्त - संहिता के दूसरे भाग के चौथे अध्याय में शिव-पार्वती - संवाद में वर्णन है —

एक समय श्रीकृष्ण, विरजा नाम की सखी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे कि तभी श्रीमती राधारानी जी को किसी सखी ने ये बात बतायी। जब श्रीमती राधारानी वहाँ गयीं तो श्रीकृष्ण, राधारानी की आगमन का समाचार पाकर अन्तर्हित हो गये तथा

विरजादेवी भी नदी के रूप में परिवर्तित हो गईं।

श्रीराधिकादेवी जी ने जब सुना कि श्रीकृष्ण पुन: विरजा के साथ क्रीड़ा कर रहे हैं तो वह तुरन्त ही उस स्थान पर उपस्थित हुईं, किन्तु उन्हें नहीं देख पाईं। श्रीकृष्ण - परायणा देवी, तब मन मन में, इस विषय को चिन्ता करती हुई, अपनी सखियों के साथ गंगा और यमुना के मध्यभाग में आईं। वहाँ श्रीमती राधिकादेवी जी ने अपने प्रभाव से वृक्षलताओं से घिरा हुआ, विविध - कुंजों से शोभायमान व

नित्य बसन्त - विराजित एक बड़े से स्थान का निर्माण किया तथा उस जगह पर नयी तरह के वस्त्र व आभूषणों से विभूषित होकर, वेणु के सहयोग से, श्रीकृष्ण का मनोहारी सुमधुर गान करने लगीं। राधानाथ श्रीकृष्ण, उस गान से मोहित होकर उस स्थान पर खिंचे चले आये और उन्होंने श्रीराधा का हाथ बड़े प्रेम से पकड़ लिया। तब श्रीकृष्ण, राधारानी का भाव देखकर प्रेम में गद्गद स्वर से कहने लगे —

श्रीकृष्ण उवाच

त्वत्तुल्या नास्ति मे कान्ते प्रिया कुत्र वरानने ।

न त्यजामि क्षणमपि त्वां प्राणसदृशीं मम ॥

एतदेव परं स्थानं मदर्थं यत्कृतं त्वया ।

सरखीभिर्नवभिर्युक्तं नवकुंजसमन्वितम् ॥

नवरूपं करिष्यामि त्वया सार्धं वरानने।

नववृन्दावनं तस्मान्मद्भक्तैर्गीयते सदा ॥

एतस्य द्वीपतुल्यत्वात् नवद्वीपं विदुर्बुधाः ।

अत्र सर्वाणि तीर्थानि निवसन्तु मदाज्ञया ॥

मत्प्रीतत्यर्थं यतः कान्ते निर्मितं स्थानमुत्तमम् ।

निवसामि त्वया सार्धं नित्यमत्र वरानने ॥

अस्मिन्नागत्य ये मर्त्यास्त्वया मां पर्युपासते।

सरित्वमावयोर्नित्यं प्राप्नुवन्ति सुनिश्चितम् ॥

एतदेव परं स्थानं यथा वृन्दावनं प्रिये ।

सकृत् गमनमात्रेण सर्वतीर्थफलं लभेत् ।

आवयोः प्रीतिजननी भक्ति च प्रलभेत् द्रुतम्॥

अर्थात् श्रीमती राधाजी से भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं — हे सुमुखि! तुम मेरी प्राणतुल्या हो, तुम जैसी और मेरी कोई प्रिया नहीं है; अतएव मैं, तुमको क्षणकाल के लिये

भी परित्याग नहीं करूँगा। तुमने मेरे लिये जो स्थान निर्माण किया है, यह उत्तम स्थान है, मैं तुम्हारे साथ रहकर नवसखी एवं नवकुंजयुक्त इस स्थान को नवरूप में परिणत करूँगा। मेरे भक्तगणों में, यह स्थान नववृन्दावन के नाम से प्रसिद्ध होगा। यह स्थान द्वीप की तरह होने के कारण विद्वान लोग इसे 'नवद्वीप' कहेंगे। मेरी आज्ञा से, इस स्थान पर सभी तीर्थ वास करेंगे। हे वरानने! क्योंकि तुमने मेरी प्रीति के लिये, इस उत्तम स्थान का निर्माण किया है, इसलिये मैं तुम्हारे साथ इस स्थान में नित्य वास करूँगा। इस

स्थान पर आकर जो व्यक्ति तुम्हारे सहित मेरी उपासना करेंगे, उन्हें निश्चय ही हमारा नित्यसखीभाव प्राप्त होगा। हे प्रिये ! यह स्थान वृन्दावनधाम की तरह श्रेष्ठ होगा। इस स्थान पर एक बार आने मात्र से व्यक्ति को सभी तीर्थों में जाने का फल लाभ होता है एवं शीघ्र ही हमारी सन्तोषदायिनी- भक्ति लाभ होती है।

अनन्तसंहिता के दूसरे भाग के तृतीय अध्याय में शिव पार्वती संवाद में कहा गया है —

श्रीमहादेव उवाच —

नवद्वीपस्य माहात्म्यं पन्चभिर्वदनैरहम्।
किं वर्णयामि नाऽनन्तः सहस्रैर्वदनैरलम् ॥
धामसारस्य कृष्णस्य वृन्दावनस्य शैलजे।
आरोहणस्य सोपानं नवद्वीपं विदुर्बुधाः ॥

अर्थात् श्रीमहादेवजी कहते हैं, हे पार्वती ! श्रीअनन्तदेव, अपने हज़ार मुख से जिस नवद्वीपधाम की महिमा वर्णन करने में समर्थ नहीं हुए हैं, मैं अपने पाँच मुखों से उसकी महिमा कैसे वर्णन कर सकता हूँ? विद्वान लोग इस नवद्वीपधाम को श्रीकृष्ण के श्रेष्ठ धाम श्रीवृन्दावन में चढ़ने के लिए सीढ़ी कहते हैं।

अनन्तसंहिता के दूसरे भाग के तृतीय अध्याय में वर्णित हुआ है कि एक समय श्रीअनन्तदेव जी ने श्रीनवद्वीपधाम में जाकर दस हज़ार वर्ष तक श्रीगौरांगदेव की आराधना की थी। उनकी आराधना से सन्तुष्ट होकर श्रीगौरचन्द्र जी ने उन्हें अपना रूप दर्शन कराया था। नागराज भी उनका सुन्दर रूप दर्शन करके प्रेम से विगलित हो गये तथा उन्होंने उनकी अपूर्व स्तुति की थी एवं श्रीगौरहरि जी से प्रार्थना की थी कि आप जिस प्रकार वृन्दावन में विराजमान रहते हैं, आप को उसी रूप में, मैं दोबारा दर्शन

करने की इच्छा करता हूँ। तब श्रीभगवान् कहते हैं —

तुष्टोऽहं सेवयाऽनन्त त्वं मे भक्तोत्तमोत्तमः।
यतोऽस्मिन् महति द्वीपे
प्रभवस्यादिसेवकः॥

अयमेव नवद्वीपो वृन्दावनसमोऽनघ ।
अनुग्रहाय जीवानां राधया निर्मितः पुरा ॥

यथा मम प्रिया राधा तथा वृन्दावनं महत् ।
तद्वदयं नवद्वीप इति सत्यं वदाम्यहम्॥

वृन्दावने यथाऽनन्त वसामि राधया सह।
राधया मिलिताङ्गोऽहं तथैवाऽस्मिन् सदा वसे ॥

यथा वृन्दावनं त्यक्त्वा गच्छामि न च
कुत्रचित् ।
तथा देव नवद्वीपं न त्यजामि कदाचन ॥

अहं वृन्दावने साधो कल्पे कल्पे सतां मुदे ।
आविर्भूय करिष्यामि यां लीलां
लोकपावनीम् ।
नवद्वीपे च नागेन्द्र ताः सर्वाः परिवर्णय ॥

यदा प्रादुर्भविष्यामि स्वयं लोकहिताय वै।
तदैव त्वं महाभाग नित्यं प्रादुर्भविष्यसि ॥

त्वां संत्यज्य क्षणमपि न च तिष्ठामि मानद ।
कल्पान्तरे करिष्यामि ज्येष्ठं वृन्दावने
ह्यहम् ॥

अस्मिन् द्वीपे महाक्षेत्रे यदाऽहं प्राथितः
सुरैः।
अवतीर्य द्विजवासे हनिष्ये कलिजं भयम् ॥

नित्यानन्दो महाकायो भूत्वा मत्कीर्तनेरतः।
विमूढान् भक्तिरहितान् मम भक्तान्
करिष्यसि ॥

ममैव नित्यं लीलानां सारभुद्धृत्य सन्मते ।
कृत्वा सुसंहितां जीवान् सर्वान् भक्तोत्तमान्
कुरु ॥

अर्थात् — हे अनन्त ! मैं, तुम्हारी सेवा से सन्तुष्ट हुआ हूँ। तुम मेरे उत्तम भक्तों से भी उत्तम हो। इसीलिए तो इतने विशाल नवद्वीप में, मेरे प्रकट होने पर, तुम ही प्रथम सेवक रूप में

उपस्थित हुए हो। हे पुण्यात्मन्! यह नवद्वीपधाम, श्रीवृन्दावन की तरह है। प्राचीनकाल में जीवों के प्रति अनुग्रह करने के लिये ही यह श्रीराधिका द्वारा निर्मित हुआ था। श्रीराधिका जिस प्रकार मेरी प्रिया है, श्रीवृन्दावन एवं यह श्रीनवद्वीपधाम भी मुझे उसी प्रकार प्रिय हैं, यह मैं सत्य - सत्य कहता हूँ।

हे अनन्त! मैं, जिस प्रकार श्रीराधिका के साथ श्रीवृन्दावन में वास करता हूँ, उसी प्रकार श्रीराधिका के साथ एक ही शरीर में, मैं सर्वदा

इस नवद्वीप में वास करता हूँ। हे देव! मैं जिस प्रकार वृन्दावन परित्याग कर अन्यत्र कहीं नहीं जाता हूँ, इसी प्रकार श्रीनवद्वीपधाम को भी मैं कभी भी परित्याग नहीं करता हूँ। हे साधो! मैं अपने भक्तों को सुख देने के लिये, प्रत्येक कल्प में वृन्दावन में आविर्भूत होकर इस लोक को पवित्र करने वाली जो समस्त लीला का आचरण करता हूँ, नवद्वीप में भी मैं उसी प्रकार लीला करता हूँ। आप अपने श्रीमुख से उन सभी लीलाओं का कीर्तन करो। हे महाभाग ! मैं लोक के मंगल के लिये, जिस समय स्वयं प्रकट होऊँगा, तुम

भी मेरे साथ हर बार ही, उसी समय जन्मग्रहण करना । हे मानद ! मैं, तुम को परित्याग करके क्षणकाल के लिये भी नहीं रह सकता हूँ। अन्यकल्प में मैं अपनी वृन्दावन लीला में तुमको अपने बड़े भाई के रूप में स्थान दूँगा । मैं जिस समय देवगणों के द्वारा प्रार्थना करने पर इस नवद्वीप महाक्षेत्र में व ब्राह्मण के घर में अवतीर्ण होकर, कलिभय को विनाश करूँगा, उस समय तुम भी, विशाल शरीर श्रीनित्यानन्द जी के रूप में जन्म ग्रहण करके, मेरे कीर्तन में मग्न रहकर भक्तिरहित विमूढ़ लोगों को, मेरे भक्त

के रूप में बदल डालना। हे साधुमते! मेरी ही लीला का सार संग्रहपूर्वक, उत्तम संहिता की रचना द्वारा सब जीवों को श्रेष्ठ भक्त बनाओ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

ऊर्ध्वाम्नाय - महातन्त्र में, शिव-पार्वती संवाद —

श्रीमहादेव उवाच

श्रीहरेः परमाशक्तिः स्वरूपाव्या वरानने।
यस्याश्छाया स्वरूपा त्वं महामाया गुणात्मिका॥

तत्प्रभावांस्त्रिधा संवित् ह्लादिनी सन्धिनी प्रिये।

सन्धिनी धामनामादेहरः साक्षात् प्रकाशिनी ॥

भगवान् सच्चिदानन्दश्चोदयामास सन्धिनीम् ।

सा सन्धिनी नवद्वीपमकरोदक्षिगोचरम् ॥

फलं पुष्पाद् यथा देवि शक्तेर्धाम तथा शुभे ।

अतो नित्यं नवद्वीपं प्रकटं हि विदुर्बुधाः ॥

अप्राकृतं नवद्वीपं चिन्मयं चिद्विशेषणम् ।

जड़ातीतं परं धाम ब्रह्मपुरं सनातनम् ॥

वदन्ति श्रुतयः साक्षाद्धहरं सर्वसुन्दरम् ।

नवसंख्यास्तथा द्वीपा: वर्तन्ते पद्मपुष्पवत्॥

— — — — — — — — — — — —

नाहं वसामि कैलासे न त्वं वससि मद्गृहे ।
न देवा दिवि तिष्ठन्ति ऋषयो न वने वने ।।

सर्वे वयं नवद्वीपे तिष्ठामः प्रेमलालसाः।
गौर गौरेति गायन्तः संकीर्तनपरा भुवि ।

ये नराः कृतिनो देवि नवद्वीपे वसन्ति ते।
जीवने मरणे तेषां पतिरेको महाप्रभुः ।।

पन्चतत्त्वात्मकं गौरं कृष्णचैतन्यसंज्ञकम् ।
ये भजन्ति नवद्वीपे ते मे प्रियतमाः किल ।।

अर्थात् शिवजी महाराज पार्वतीजी को कहते हैं — हे सुमुखि ! श्रीहरि की परमाशक्ति को भगवान की स्वरूपशक्ति नाम से कहा जाता है। तुम, उनकी ही छाया - स्वरूपा

त्रिगुणात्मिका माया - शक्ति हो। उस स्वरूपशक्ति में संवित् (ज्ञान), हादिनी और सन्धिनी (सत्ता - विस्तारिणी), यह त्रिविध प्रभाव वर्तमान रहते हैं। सन्धि नी शक्ति ही, साक्षाद् भाव से श्रीहरि के धाम - नामादि प्रकाश करती हैं। सच्चिदानन्दमय भगवान की प्रेरणा से, सन्धिनी शक्ति ने ही श्रीनवद्वीपधाम को लोगों के दर्शनों के योग्य बनाया है।

हे देवी! पुष्प से जैसे फल प्रकाश होता है, उसी तरह शक्ति से, धाम का

प्रकाश होता है। इसीलिए विद्वान लोग श्रीनवद्वीप को नित्य प्रकटित कहकर वर्णन करते हैं। सभी श्रुतियाँ इन श्रीनवद्वीपधाम को अप्राकृत, चिन्मय चिद्विशेषणयुक्त, जड़ जगत से अतीत, परम सनातन ब्रह्मपुर, मनोरम तथा भक्तों के हृदय में स्थित सूक्ष्म कमल कहकर कीर्तन करती हैं। यहाँ के नौ द्वीप भी कमल की पंखुड़ियों की तरह शोभा पाते हैं।

इस समय वास्तव में, मैं कैलाश में वर्तमान नहीं हूँ, तुम भी कैलाश पर्वत वाले अपने घर पर वर्तमान नहीं

हो, देवतागण भी इस समय स्वर्ग में नहीं हैं, यहाँ तक कि ऋषिगण भी वन वन में अवस्थान नहीं करते हैं, हम सब श्रीगौरांग के प्रेम-लाभ की आशा से, गौरनाम कीर्तन करते हुए, पृथ्वी पर श्रीनवद्वीपधाम में वास कर रहे हैं। जो सब बुद्धिमान लोग श्रीनवद्वीपधाम में वास करते हैं, एकमात्र महाप्रभु ही उनके जीवन मरण में सर्वक्षण उनके पालनहार बने रहते हैं। श्रीकृष्णचैतन्य नामक पंचतत्त्वात्मक श्रीगौरसुन्दर का श्रीनवद्वीप में जो भजन करते हैं, उन्हें मेरा प्रियतम् समझना।

श्रीनवद्वीपधाम - माहात्म्य के प्रथम खण्ड के प्रथम अध्याय में कहा है —

मुण्डके कथितं यत्तु ब्रह्मधाम हिरण्मयम्।
मायापुरगतं तद्धि योगपीठं सुनिर्मलम् ॥

हिरण्यमये परे कोषे विरज बह्म निष्कलम् ।
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो
विदुः ॥

स वेदैतत् परमं ब्रह्मधाम यत्र विश्वं निहितं
भाति शुभम् ।
उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते
शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः ॥

मुण्डक उपनिषद् में जो हिरण्मय ब्रह्मधाम वर्णित हुआ है, मायापुर स्थित सुनिर्मल योगपीठ ही, वही ब्रह्मधाम है। हिरण्मय परम कोषाभ्यान्तर में रजोगुण के संसर्ग से रहित सुनिर्मल, ज्योतिष्कगण में परम ज्योतिःस्वरूप या विश्वप्रकाशक, जो अखण्ड ब्रह्म के रूप से अवस्थित है, आत्मतत्त्वज्ञ ही, उसको जान सकते हैं। जो लोग निष्काम है व बुद्धिमान हैं तथा परम पुरुष के उपासक हैं वे ही इस विश्व के आधार व परम निर्मल स्वरूप परमब्रह्म के धाम को जान सकते हैं एवं उस अप्राकृत धाम की

कृपा से इस संसार को अतिक्रम करने में समर्थ हैं।

श्रीचैतन्यचरित नामक महाकाव्य में श्रीकवि कर्णपूर जी कहते हैं —

इयं मही भाग्यवती महीयसी दिवोऽपि
दिव्यादपि निर्मलैर्गुणैः।
महान्ति रत्नानि यदा ददात्यतो दधौ
नवद्वीपमतीव दुर्लभम्॥

अर्थात् — अशेष पुण्यगुणशालिनी यह पृथ्वी दिव्य स्वर्गधाम से भी अधिक भाग्यवती एवं श्रेष्ठ है। इसीलिए यह वसुन्ध रा, सर्वदा उत्कृष्ट प्रकार के विभिन्न रत्न

प्रदान करती रहती है तथा यही कारण है कि नवद्वीप नामक अति दुर्लभ पुण्यस्थान को यह पृथ्वी अपनी गोद में धारण करने में समर्थ हुई है। श्रीकविकर्णपूर स्वरचित श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नामक नाटक में कहते हैं —

गौडक्षौणी जयति कतमा पुण्य -
तीर्थावतंस-प्राया यासौ वहति नगरीं
श्रीनवद्वीपनाम्नीम्।
यस्यां चामीकरवररुचेरीश्वरस्यावतारो
यस्मिन् मूर्तो पुरि पुरि परिस्पन्दते
भक्तिदेवी॥

अर्थात् जो भूमि पुण्य तीर्थ, सबकी शिरोभूषणस्वरूप है, जिसने नवद्वीप नाम की नगरी को अपनी गोद में धारण किया हुआ है, वही गौड़भूमि जय युक्त हो। उस गौड़भूमि में अर्थात् नवद्वीप में कनककान्ति श्रीगोरसुन्दर अवतीर्ण हुए थे। यही नहीं, यहाँ की प्रत्येक पुरी में भक्ति की स्फूर्ति प्राप्त होती है।

श्रीगौरगणोद्देश- दीपिका नामक ग्रन्थ में कहा है —

रसज्ञाः श्रीवृन्दावनमिति यमाहुर्बहुविदो
यमेतं गोलोकं कतिपय जनाः प्राहुरपरे ।

सितद्वीपं प्राहुः परमपि परव्योम जगदु -
र्नवद्वीपः सोऽयं जयति परमाश्चर्यमहिमा ॥

अर्थात् रसिक लोग जिसको श्रीवृन्दावन, विद्वान लोग गोलोक और दूसरे व्यक्ति जिसको श्वेतद्वीप एवं परव्योम कहते हैं, अति आश्चर्यमयी महिमा वाले उस नवद्वीपधाम की जय हो।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव